# अध्याय - तृतीय
# शोध प्रविधि

# अध्याय - तृतीय
# शोध प्रविधि

**3. 1 प्रस्तावना :**

अनुसंधान कार्य सही दिशा की ओर अग्रसर होने के उद्ढेश्य से यह जानना आवश्यक होता है कि शोध प्रबंध का व्यवस्थित अभिकल्प या रूपरेखा तैयार किया जाए , क्योंकि यही अभिकल्प शोध को निश्चित दिशा प्रदान करता है। इसमें न्याढर्श चयन की अपनी विशेष भूमिका होती है। न्याढर्श जितने अधिक सुढृढ होंगे शोध के परिणाम उतने ही विश्वसनीय वैध एवं परिशुद्ध होंगे। न्याढर्श चयन के पश्चात उपकरणों एवं तकनीक का चयन भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसी आधार पर प्रढत्तों का संकलन किया जाता है। प्रस्तुत अध्याय में पूर्व कथित समस्या के परीक्षण हेतु आंकड़ो के संकलन एवं विश्लेषण हेतु प्रयोग की गई विधियों में मुख्यत: न्याढर्श का चयन एवम प्रशासन अनुसंधान हेतु उपयोगी उपकरण एवं प्रढत्तों के संकलन का वर्णन करने का प्रयास किया गया है।

**3.2 न्याढर्श :**

जब किसी जनसंख्या (इकाई, वस्तुओं या मनुष्यों का समूह) में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी कुछेक इकाइयों को चुन लिया जाता है , तो इस चुनने की क्रिया को न्याढर्श कहते है तथा चुनी हुई इकाइयों के समूह को न्याढर्श चयन कहते है।

**गुड एंड हट - (1960) :**

"प्रतिढर्श जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि एक विस्तृत समूह का छोटा सा प्रतिनिधि है।"

**बोगार्डस - (1954) :**

" पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार एक समूह में से निश्चित प्रतिशत की इकाइयों का चुनाव ही प्रतिढर्श प्रक्रिया है।"

**3.2.1 न्याढर्श चयन :**

**राय -(1991) :** ''न्याढर्श पद्धति अनुसंधान की वह पद्धति है जिसमें अनुसंधान विषय के अन्तर्गत सम्पूर्ण जनसंख्या से सावधानीपूर्वक कुछ इकाइयों को चुना जाता है जो सम्पूर्ण जनसंख्या की आधारभूत विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं''

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्धारा विदिशा जिले के नगरीय क्षेत्र के व ग्रामीण क्षेत्र के उच्च प्राथमिक स्तर के शासकीय विद्यालयों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्धारा विदिशा जिले के नगरीय क्षेत्र व ग्रामीण क्षेत्र में उद्धदेश्य पूर्ण न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है।

चयनित विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर की कुल बालिकाओं की संख्या 120 है जिसमें 60 बालिकाओं को ग्रामीण क्षेत्र व 60 बालिकाओं को नगरीय क्षेत्र से लिया गया है।ग्रामीण क्षेत्र में कक्षा छठवी, सातवीं व आठवीं की प्रत्येक कक्षा से 20 बालिकाओं को लिया गया है। नगरीय क्षेत्र में भी कक्षा छठवीं, सातवीं व आठवीं की प्रत्येक कक्षा से 20 बालिकाओं को लिया गया है।

तालिका क्रमांक -3.1

ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं को दर्शाने वाली तालिका

| कक्षा | ग्रामीण क्षेत्र | नगरीयक्षेत्र | योग |
|---|---|---|---|
| छठवी | 20 | 20 | 40 |
| सातवी | 20 | 20 | 40 |
| आठवी | 20 | 20 | 40 |
| योग | 60 | 60 | 120 |

National Institute of Education LIBRARY

3.3 शोध चर :

चर किसी घटना, क्रिया या प्रक्रिया का वह पक्ष या स्वरूप है जो अपनी उपस्थिति से किसी दूसरी घटना या प्रक्रिया को, जिसका अध्ययन किया जा रहा है प्रभावित करता है।

एडवर्डस :

" चर वह प्रत्येक वस्तु है जिसका हम निरीक्षण कर सकते है और वह इस प्रकार की हो जिसकी इकाई को निरीक्षण के विभिन्न वर्गो में कही वर्णन किया जा सके।"

शोध मुख्यत: दो प्रकार के चरो पर केन्द्रित रहता है। 1. स्वतंत्र चर 2. आश्रित चर

1. **स्वतंत्र चर :**

टाउनसैण्ड के अनुसार " स्वतंत्र चर वह राशि है जिसे प्रयोगकर्ता किसी निरीक्षित घटना से सम्बधित करने के लिए घटाता बढ़ाता है ।"

2. **आश्रित चर :**

टाउनसैण्ड के अनुसार "आश्रित चर वह चल राशि है जो प्रयोगकर्ता द्धारा स्वतंत्र चर के प्रदर्शन पर प्रदर्शित हो, हटाने पर अदृश्य हो तथा मात्रा के परिवर्तित होने पर परिवर्तित हो जाए ।"

**3.3.1अध्ययन में प्रयुक्त चर :**

**स्वतंत्र चर :** 1. उपलब्धि - अभिप्रेरणा
2. सामाजिक - आर्थिक स्तर

**आश्रित चर :** 1. शैक्षिक उपलब्धि

**उपचर :**

लिंग - बालिकाएँ

क्षेत्र - ग्रामीण एवम नगरीय

**3.4. शोध में प्रयुक्त उपकरण :**

अनुसंधान में नवीन तथ्य संकलित करने हेतु अथवा नवीन क्षेत्र का का उपयोग करने हेतु कतिपय परीक्षणों की आवश्यकता होती है । इन्ही यंत्रों को उपकरण कहते है ।

उपरोक्त बिन्दुओं का ध्यान रखते हुए अनुसंधान कर्ता द्धारा निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है ।

**1. शैक्षणिक उपलब्धि :**

शैक्षिक उपलब्धि के लिए उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं का कक्षा छठवी के लिए कक्षा पाँचवी, कक्षा सातवीं के लिए कक्षा छठवी व कक्षा आठवी के लिए कक्षा सातवी के वार्षिक परीक्षाफल को लिया गया है ।

**2. उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण :**

ग्रामीण व नगरीय विद्यालय की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा के लिए डॉ.टी. आर. शर्मा का उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण का प्रयोग किया गया जो 11 से 15 वर्ष तक के बच्चों के लिए है । इसमें कुल 38 प्रश्न है ।

प्रत्येक प्रश्न के ढो विकल्प हैं जिसमें एक सही व एक गलत है। सही के लिए 1 अंक व गलत के लिए 0 अंक निर्धारित किया गया है परीक्षण के अंकों के निर्धारण के आधार पर उपलब्धि अभिप्रेरणा क तीन वर्ण बनते है। (1) उच्च अभिप्रेरित (2) मध्यम अभिप्रेरित (3)निम्न अभिप्रेरित। इन्हीं तीनों के आधार पर तालिकाओं उपलब्धि अभिप्रेरणा का पता लगाया गया है।

### 3. सामाजिक आर्थिक परिसूची :

ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की उच्च प्राथमिक स्तर की बालिकाओं के सामाजिक आर्थिक स्तर का अध्ययन करने के लिए डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ठ की सामाजिक आर्थिक स्तर परिसूची,(ग्रामीण व नगरीय) का प्रयोग किया गया है । इस परिसूची में 20 प्रशन सम्मिलित किए गए है प्रत्येक प्रश्न के अंकों के निर्धारण के लिए तीन या चार विकल्प ढिए गए हैं व इन विकल्पों के अंकां का निर्धारण अलग-अलग प्रश्नों की गुणवत्ता के आधार पर किया गया है। नगरीय परिसूची का विश्वसनीयता गुणांक 87 है व ग्रामीण परिसूची का का विश्वसनीयता गुणांक .85 है । परिसूची के अधिकतम प्राप्तांक 250 है ।

### 3.5 उपकरणों का प्रशासन :

सर्वप्रथम विढिशा जिले के नगरीय क्षेत्र के शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक से अनुमति प्राप्त कर न्यादर्श में सम्मिलित बालिकाओं को अलग कक्ष में बैठाकर उन्हें शोध के उद्ढेश्य एंव आवश्यकता के बारे में जानकारी ढी गई । तत्पश्चात सामाजिक आर्थिक स्तर पर सूची के प्रत्येक बिन्ढू पर उनसे सविस्तार चर्चा की गई एंव सामाजिक आर्थिक स्तर परिसूची भरने के लिए बालिकाओं को ढी गई । उसके बाढ आवश्यक निर्ढेश जो इस परीक्षण में ढिए गए है, उन्हें भी अच्छी तरह से समझा ढिया गया । तत्पश्चात बालिकाओं से परीक्षण करने के लिए कहा गया। बालिकाओं को जिन शब्ढों को समझने में कठिनाई में कठिनाई हो रही थी, उनका अर्थ सरल शब्ढों में बताया गया ताकि बालिकाएँ उस शब्ढ का गलत अर्थ न समझ लें । बालिकाओं ढ्वारा परिसूची व परीक्षण भरते समय शोधकर्ता निरन्तर कक्ष में घूमते हुए छात्राओं की कठिनाइयों को ढूर करती रही । उपरोक्त कार्य में कक्षाध्यापक से भी सहयोग लिया गया ।

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय में भी बालिकाओं से यह परीक्षण व परिसूची भरवाते समय यही प्रक्रिया ढोहराई गई ।

### 3.6 प्रदत्त संकलन :

लघु शोध के अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए प्रदत्तों का संकलन किया गया है। इस कार्य के लिए क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल द्वारा एक निश्चित समय सीमा निर्धारित की गई थी। प्रदत्त संकलन के लिए विदिशा जिले के ग्रामीण एंव नगरीय क्षेत्र के विद्यालयों को चयनित कर शालाओं में कार्य सम्पादित किया। संस्था के प्रधानाध्यापक, शिक्षक व शिक्षिकाओं से परीक्षण को प्रशासित करने हेतु कक्षा छठवीं, कक्षा सातवीं, व कक्षा आठवीं का एक समय चक्र देने का अनुरोध किया तथा प्रदत्त संकलन का कार्य सम्पादित किया।

### 3.7 प्रयुक्त सांख्यकीय विधि :

संग्रहीत प्रदत्तों को संगठित तथा वर्गीकृत करने के पश्चात आँकड़ो के विश्लेषण एंव व्याख्या हेतु सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया। नगरीय एंव ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि, उपलब्धि अभिप्रेरणा व सामाजिक आर्थिक स्तर के मध्य तुलनात्मक अध्ययन हेतु टी – टेस्ट प्रयुक्त किया गया।

ग्रामीण एंव नगरीय क्षेत्र की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव व शैक्षिक उपलब्धि पर उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकीय को प्रयुक्त किया गया।

ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक आर्थिक स्तर व उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभाव के मध्य अंतर का अध्ययन करने के लिए प्रतिगमन समीकरण का उपयोग किया गया है।